पुना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Claas-VIII

Hindi

Specimen copy

Year- 2020-21

Semester- 2

November

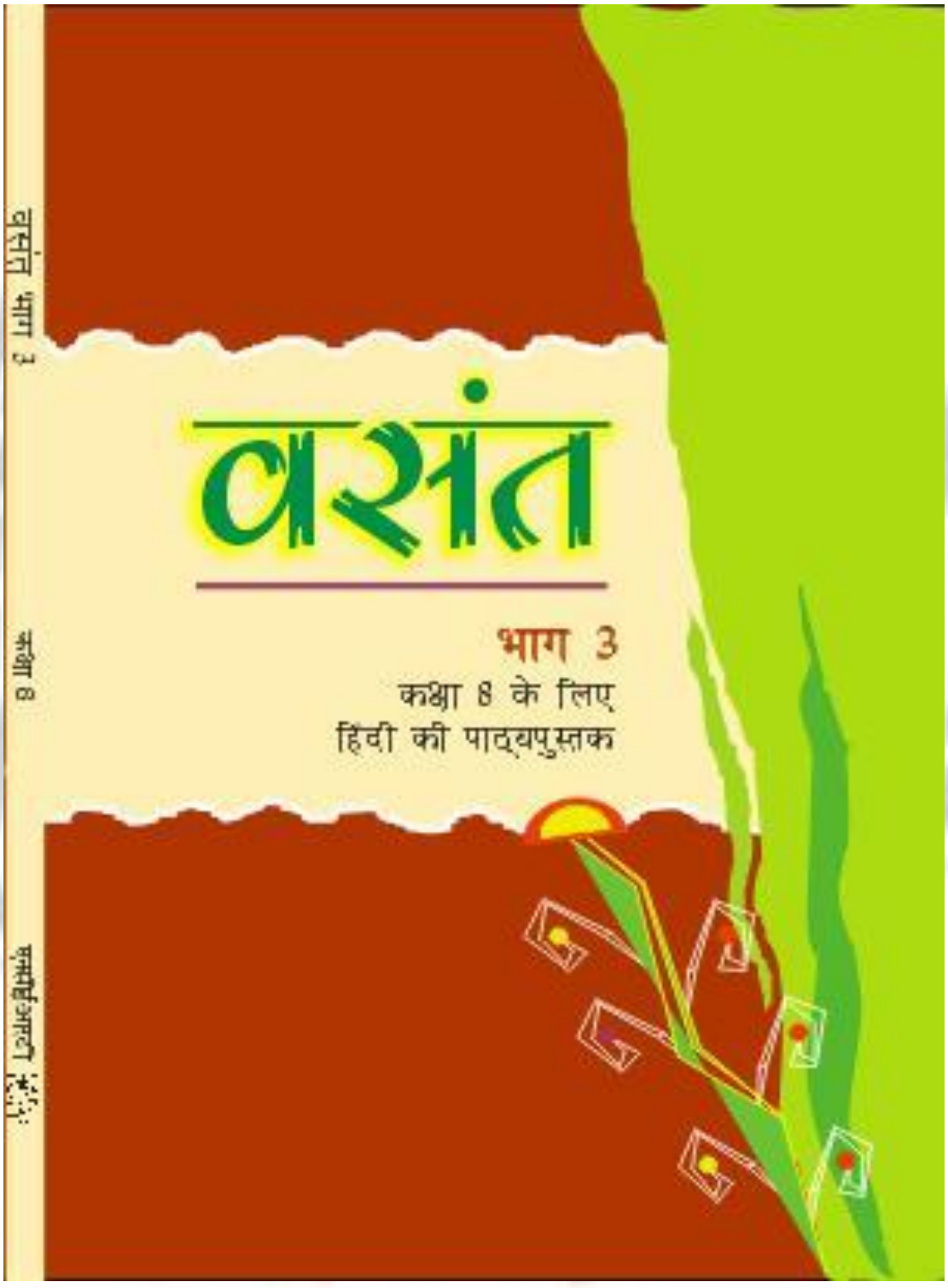
वसंत भाग 3
वसंत
भाग 3
कक्षा 8 के लिए
हिंदी की पाठ्यपुस्तक
कक्षा 8

पााठ 14 अकबरी लौटा

लेखक – अन्नपूर्णानन्द वर्मा

जन्म – 21 सितंबर 1895 (काशी, उत्तर प्रदेश)

मृत्यु – 04 दिसंबर 1962

* पाठ का सार –

पंडित अन्नपूर्णानद जी ने इस कहानी में बताया है कि लाला झाऊलाल नामक व्यक्ति बहुत अमीर नहीं है। पर उन्हें गरीब भी नहीं कहा जा सकता। पत्नी के ढाई सौ रूपए माँगने तथा अपने मायके से लेने की बात पर अपनी इज्जत के लिये सात दिन में रुपये देने की बात की।पाँच दिन बीतने पर अपने मित्र बिलवासी को यह घटना सुना कर पैसे की इच्छा रखी पर उस समय उनके पास रूपए न थे। बिलवासी जी ने उसके अगले दिन आने का वादा किया जब वह समय पर न पहुँचे तो झाऊलाल चिंता में छत पर टहलते हुए पानी माँगने लगे। पत्नी द्वारा लाये हुए नापसंद लोटे में पानी पीते हुए लोटा नीचे एक अंग्रेज पर गिर गया।अंग्रेज एक लंबी चौड़ी भीड़ सहित आँगन में घुस गया और लोटे के मालिक को गाली देने लगा। बिलवासी जी ने बड़ी चतुराई से अंग्रेज को ही मुर्ख बनाकर उसी लोटे को अकबरी लोटा बताकर उसे 500 रूपए में बेच दिया। इससे रुपये का इंतजाम भी हो गया और झाऊलाल की इज्जत भी बच गई। इससे लाला बहुत प्रसन्न हुए उसने बिलवासी जी को बहुत धन्यवाद दिया।बिलवासी ने पत्नी के संदूक से लाला की मदद के लिये निकले गए ढाई सौ रुपये उसके संदूक में वापस रख दिए फिर चैन की नींद सो गए।

* शब्दार्थ

1)**ढाई सौ** – 250
2)**रोब – अकड़**
3)**प्रतिष्ठा – इज्जत**
4)**गाथाएँ – कहानियाँ**
5)**दुम – पूंछ**
6)**विपदा – मुसीबत**
7)**खुक्ख – खाली हाथ**
8)**प्रकट – उपस्थित**
9)**बेढ़ंगी – बेकार**
10)**वेग – गति**
11)**ओझल – गायब**
12)**ईजाद – खोज**
13)**प्रधान – मुख्य**
14)**पूर्व – पहले**
15)**विज्ञ – ज्ञानी**
16)**सुशिक्षित – पढ़ा-लिखा**

* साहित्य-विभाग

1) **"लाला ने लोटा ले लिया, बोले कुछ नहीं, अपनी पत्नी का अदब मानते थे।" लाला झाउलाल को बेढंगा लोटा बिलकुल पसंद नहीं था। फिर भी उन्होंने चुपचाप लोटा ले लिया। आपके विचार से वे चुप क्यों रहे?**

उत्तर– एक सभ्य मनुष्य अपनी पत्नी का सम्मान करता है। लाला झाउलाल सभ्य मनुष्य थे। कहानी में लाला झाउलाल छह दिनों तक भी रूपयों का इंतजाम नहीं कर पाए थेइसलिए वह बहुत दुःखी और शर्मिन्दा थे। और इसीलिए उन्होंने लोटा चुपचाप ले लिया और पानी

पीने लगे।

2) "लाला झाउलाल जी ने फौरन दो और दो जोड़कर स्थिति को समझ लिया।"आपके विचार से लाला झाउलाल ने कौन-कौन सी बातें समझ ली होंगी?

उत्तर- लाला भीड़ को घर में घुसते देख ही समझ गए कि उनके हाथ से छूटा लोटा जरूर किसी पर गिरा है। जिसकी शिकायत लेकर ये भीड़ उनके घर में चली आ रही थी।

3)बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध कहाँ से किया था?

उत्तर- बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध अपनी पत्नी के संदूक से चोरी करके निकाल कर किया था। यद्यपि चाबी उसकी पत्नी की सोने की चेन में बँधी रहती थी, पर उन्होंने चुपचाप उसे उतार कर ताली से संदूक खोल लिया था और रुपए निकाल लिए थे। बाद में वे रुपए चुपचाप वहीं रख भी दिए। पत्नी कुछ न जान पाई।

4) आपके विचार में अंग्रेज ने वह पुराना लोटा क्यों खरीद लिया?

उत्तर- अंग्रेज पुरानी ऐतिहासिक महत्त्व की चीज़े खरीदने के शौकीन होते हैं। उस अंग्रेज का एक पड़ोसी मेजर डगलस पुरानी चीज़ों में उससे बाजी मारने का दावा करता रहता था। उसने एक दिन जहाँगीरी अंडा दिखाकर कहा था कि वह इसे दिल्ली से 300 रुपए में लाया है। वह लोटा अकबरी था ही नहीं, बिलवासी ने उसे मूर्ख बनाया था। इस लोटे को दिखाकर वह मेजर डगलस को नीचा दिखाना चाहता था और स्वंय को श्रेष्ठ सिद्ध करना चाहता था।

5)पं बिलवासी मिश्र कहाँ आते दिखाई पड़े? उन्होंने आते ही क्या किया? उन्होंने अंग्रेज के साथ किस प्रकार सहानुभूति प्रकट की?

उत्तर- पं बिलवासी मिश्र भीड़ को चीरते हुए आँगन में आते दिखाई पड़े। उन्होंने आते ही पहला काम यह किया कि उस अंग्रेज को छोड़ कर बाकी जितने लोग थे सबको बाहर कर रास्ता दिखाया और फिर आगँन में कुर्सी रखकर उन्होंने उस अंग्रेज से कहा कि उसके पैर में शायद कुछ चोट आ गई है। इसलिए वह आराम से कुर्सी पर बैठ जाइए। जब पं बिलवासी ने अंग्रेज को बैठने को कहा तो अंग्रेज बिलवासी जी को धन्यवाद देते हुए बैठ गया। लाला झाऊलाल की ओर इशारा करके अंग्रेज ने बिलवासी जी से पूछा कि क्या वे लाला को जानते हैं? बिलवासी बिलकुल मुकर गए और कहते हैं कि वे लाला को बिलकुल नहीं जानते और न ही वह ऐसे आदमी को जानना चाहते हैं जो राह चलते व्यक्तियों को लोटे से चोट पहुँचाए।

6)इस भेद को मेरे सिवाए मेरा ईश्वर ही जानता है। आप उसी से पूछ लीजिए। मैं नहीं बताँऊंगा।'' बिलवसी जी ने यह बात किससे और क्यों कही?

उत्तर'बिलवासी' जी ने यह बात 'लाला झाऊलाल' से कही क्योंकि उसने ये पैसे अपनी पत्नी के संदूक से चुराए थे। इस रहस्य को वह 'झाऊलाल' के सामने खोलना नहीं चाहते थे।

7)''उस दिन रात्रि में बिलवासी जी को देर तक नींद नहीं आई।'' समस्या झाऊलाल की थी और नींद बिलवासी की उड़ी तो क्यों?

''बिलवासी'' जी ने अपने मित्र ''लाला झाऊलाल'' की सहायता करने के लिए अपनी पत्नी के संदूक से रूपए चुराए थे। ''बिलवासी'' जी अपनी पत्नी के सोने की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे चुपचाप उसी तरह रूपए संदूक में रखना चाहते थे। यहाँ समस्या झाऊलाल की नहीं बल्कि बिलवासी जी की थी। इसीलिए बिलवासी जी को उस रात देर तक नींद नहीं आ रही थी।

व्याकरण

* मुहावरा की परिभाषा

ऐसे वाक्यांश, जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराये, मुहावरा कहलाता है।

साधारण अर्थ में – मुहावरा किसी भाषा में आने वाला वह वाक्यांश है, जो अपने शाब्दिक अर्थ को न बताकर किसी विशेष अर्थ को बताता है।

1) अँगारे बरसना– अत्यधिक गर्मी पड़ना।

- जून मास की दोपहरी में अंगारे बरसते प्रतीत होते हैं।

2) गारों पर पैर रखना– कठिन कार्य करना।

- युद्ध के मैदान में हमारे सैनिकों ने अंगारों पर पैर रखकर विजय प्राप्त की।

3) अँगारे सिर पर धरना- विपत्ति मोल लेना।

- सोच–समझकर काम करना चाहिए। उससे झगड़ा लेकर व्यर्थ ही अंगारे सिर पर मत धरो।

4) अँगूठा चूसना– बड़े होकर भी बच्चों की तरह नासमझी की बात करना।

- कभी तो समझदारी की बात किया करो। कब तक अंगूठा चूसते रहोगे?

5) आस्तीन का साँप– कपटी मित्र।

- प्रदीप से अपनी व्यक्तिगत बात मत कहना, वह आस्तीन का साँप है; क्योंकि आपकी सभी बातें वह अध्यापक महोदय को बता देता है।

6) कान भरना– चुगली करना।

- मोहन ने सोहन से कहा कि आज साहब नाराज हैं, किसी ने उनके कान भरे हैं।

7) गाल बजाना– डींग मारना।

- केवल गाल बजाने से सफलता नहीं मिल सकती, इसके लिए परिश्रम भी परम आवश्यक है।

8) घी के दीये जलाना– खुशी मनाना।

- अपने प्रतिद्वन्द्वी की हार पर सुनील ने घी के दीये जलाए।

9) जी–जान लड़ाना– बहुत परिश्रम करना।

- हमने तो कार्यक्रम की सफलता के लिए जी–जान लड़ा दी, किन्तु उन्हें कोई बात पसन्द ही नहीं आती।

10) दंग रह जाना- आश्चर्यचकित होना।

- बाबा के चमत्कारों को देखकर मैं तो दंग रह गया।

11) दाँत खट्टे करना– हरा देना।

- भारतीय सैनिकों ने कारगिल युद्ध में पाकिस्तानी सैनिकों के दाँत खट्टे कर दिए।

12) पानी फेर देना– निराश कर देना।

- अनमोल ने विद्यालय छोड़कर अपने पिता की उम्मीदों पर पानी फेर दिया।

13) बाँछे खिल जाना– प्रसन्नता से भर उठना।।

- अपनी प्रोन्नति का समाचार सुनकर शशांक की बाँछे खिल गईं।

14) हवा से बातें करना– बहुत तेज गति से दौड़ना।

- चेतक राणा के सवार होते ही हवा से बातें करने लगता था।

15)होश उड़ जाना- घबरा जाना।

- सामने से शेर को आता देखकर शिकारी के होश उड़ गए।

लेखन -विभाग

* कहानी- पुजारी की कहानी

एक शहर में प्राचीनकाल का एक बहुत पुराना मन्दिर था, मन्दिर के चारो तरफ एक चार-दीवारी लगी हुई थी और के अंदर एक खूब सुंदर बगीचा लगाया हुआ था जिसमें बिभिन्न प्रकार के सुंदर-सुंदर पेड़-पौंधे लगाये हुए थे जिसकी वजह से वो मन्दिर और भी सुंदर दिखता था।मन्दिर में भगवान का पूजा-पाठ करने के लिये एक पुजारी जी रहते थे, और वही बगीचे का भी देखभाल रखते थे क्यूँकि ये करने से उन्हें बहुत आनन्द मिलता था।उस मन्दिर के बगल में एक और छोटा सा मन्दिर था जिसमें एक बहुत बुजुर्ग पुजारी रहते थे और वो उस छोटे मँदिर के भगवान की मूर्ति का पूजा पाठ करते थे।दोनों मन्दिर के बीच में एक दीवार थी जो उन दोनों मन्दिर को अलग करती थी।एक दिन उस बडी मन्दिर में दर्शन करने के लिये कोई बड़ा अदमी आने वाला था और उसको ख़ुश करने के लिये बड़े मन्दिर के पुजारी जी मन्दिर और बगीचे की साफ-सफाई करने में लग गये, 2 दिन कड़ी मेहनत करके उन्होंने मन्दिर और बगीचे की ऐसी सफाई कर दी कि बगीचे में एक सूखा पत्ता भी नहीं पड़ा था।

उस छोटे मन्दिर का बुजुर्ग पुजारी दीवार के उस पार से ये सब बड़े ध्यान से देख रहा था।मन्दिर और बगीचे कि साफ-सफाई करने के बाद बड़े मन्दिर के पुजारी जी अपनी वाह-वाही सुनने के लिये उस छोटे मन्दिर के पुजारी के पास गये और बोले कि "अभी बगीचा और मन्दिर कितना सुंदर और मनमोहित लग रहा है।"तो वो बुजुर्ग पुजारी जी ने कहा कि आपने साफ-सफाई तो बड़े अच्छे से की लेकिन उसमें एक चीज कि कमी है जो बगीचे की सुन्दरता को अधूरा बना रहा है।बड़े मन्दिर के पुजारी ने पूछा कि वो क्या है?

बुजुर्ग पुजारी ने कहा कि आप मुझे दीवार के उस पार खीचो फिर मैं आप को बताता हूँ कि क्या कमी रह गयी है, उन्होंने बुजुर्ग पुजारी को दीवार के उस पार खींच लिया।दीवार के उस पार आने के बाद वो बुजुर्ग पुजारी सीधा बगीचे की तरफ चला गया और वहा जाकर सारे पेड़ों को पकड़कर धीरे-धीरे हिला दिया जिससे बगीचे में थोड़े सूखे और हरे पत्ते गिर गये। बुजुर्ग पुजारी ने कहा कि अब बगीचा बहुत सुंदर लग रहा है।

सीख: आप जैसे भी हो बहुत अच्छे हो।

* गतिविधि- अकबर का चित्र बनाओ अथवा अकबरी लौटा का चित्र बनाओ।

भारत की खोज
पाठ 4 युगों का दौर

1 मौर्य साम्राज्य के अवसान के बाद उसका स्थान किसने लिया?
उ- शुंग वंश ने
2 हेलिओदो स्तंभ के नाम से क्या प्रसिद्ध है?
उ- ग्रेनाइट पत्थर की एक लाट
3 बौद्ध धर्म किन दो संप्रदायों में बट गया?
उ- महायान और हीनयान
4 नागार्जुन कौन थे?
उ- महान व्यक्ति एवं बौद्ध शास्त्र एवं भारतीय दर्शन के बड़े विदवान थे।
5 संस्कृत भाषा का निर्माण कब व किसने किया था?
उ- संस्कृत भाषा का निर्माण 2600 वर्ष पहले पाणिनि ने किया था।
6 कुषाणों का प्रसिदध शासक कौन था?
उ- कुषाणों का प्रसिदध शासक नागार्जुन था।
7 कुषाणों ने अपना साम्राज्य कहाँ स्थापित किया?
उ- कुषाणों ने अपना साम्राज्य एक शक्तिशाली भारतीयकरण में स्थापित किया।
8 समुद्रगुप्त को भारत का क्या कहा जाता है?
उ- समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा जाता है।
9 कालिदास की प्रमुख रचना कौन-सी थी?
उ- कालिदास की प्रमुख रचना मेघदूत और मृच्छकटिकम थी।
10 कंबोडिया की वर्णमाला कहाँ से ली गई?
उ-कंबोडिया की वर्णमाला दक्षिण भारत से ली गई हैं।
11 शून्य की खोज किसने की?
उ- शून्य की खोज आर्यभट ने की।

भारत की खोज
पाठ 5 नई समस्याएँ

1 हर्षवर्धन कहाँ पर शासन करता था?
उ-उत्तर भारत में
2 चीनी यात्री हुआन कहाँ पर अध्ययन करते थे?
उ- नालंदा में
3 सुलतान महमूद गजनी ने भारत पर कब आक्रमण किया?
उ- 1000 ई के आसपास
4 शाहबुदीन कब दिल्ली की गददी पर बैठा?
उ- 1192
5 औरंगजेब की मृत्यु कब हुई ?
उ- 1707

6 भारत में मुगल साम्राज्य की नींव किसने डाली?
उ-भारत में मुगल साम्राज्य की नींव बाबरने डाली।
7 कबीर के गुरु कौन थे?
उ- कबीर के गुरु संत रामानंद जी थे।
8 सिख धर्म के स्थापक कौन थे?
उ- सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक थे।
9 अकबर ने भारत के शासन की डोर कब सँभाली?
उ- अकबर ने भारत केश शासक की डोर 1556 में सँभाली।
10 " पदमावत" की रचना किसने की?
उ- मलिक मोहम्मद जायसी ने "पदमावत "की रचना की।
11 महमूद के बाद गज़नी पर किसका अधिकार हुआ?
उ- महमूद के बाद गजनी पर शाहबुदोन गौरी का अधिकार हुआ।
12 प्लासी के युदध में किसकी जीत हई?
उ-प्लासी के युदध में रबिर्ट क्लाइव की जीत हुई।

कविता- 15 सूर के पद

कवि सूरदास

जन्म 1478 ईस्वी

मृत्यु 1580 ईस्वी

*** पाठ का सार –**

पहले पद में सूरदास जी ने कृष्ण के मन के भावों का सुन्दर वर्णन है। कृष्ण चाहते थे कि उनकी चोटी भाई बलराम की तरह ज़मीन पर लोटे। यद्यपि माँ यशोदा नियम से उनके बाल धोती थी और गूंथती थी। फिर भी उनके बाल लंबे नहीं होते थे। दूसरे पद में एक ग्वालन माँ यशोदा को उलाहना देते हुए कहती हैं कि नटखट कृष्ण प्रतिदिन उनके घर से मक्खन चोरी करके खा जाते हैं। वह यशोदा से कहती हैं कि उसने अनोखे पुत्र को जन्म दिया है जो दूसरों से अलग है। ग्वालन की शिकायत में सूरदास जी द्वारा वात्सल्य प्रेम की अभिव्यक्ति सराहनीय है।

* शब्दार्थ

1 कबहिं- कब
2 किती - कितनी
3 पियत- पिलाना
4 अजहूँ - आज भी
5 बल- बलराम
6 बेनी- चोटी
7 लाँबी-मोटी- लंबी-मोटी
8 काढ़त- बाल बनाना
9 गुहत- गूँथना
10 न्हवावत- नहलाना
11 भुइँ- भूमि
12 लोटी- लोटने लगी
13 काचौ- कच्चा
14 पियावति- पिलाती
15 लाल- बेटा
16 माखन- मक्खन
17 दुपहर - दोपहर
18 ढूँढ़ि- खोजकर
19 आपही- अपने आप
20 किवारि- दरवाजा
21 पैठि- घुसकर
22 सखनि - दोस्तमित्र
23 उखल- ओखली

* अतिलघु

1) श्रीकृष्ण गोपियों का माखन चुरा-चुराकर खाते थे इसलिए उन्हें माखन चुरानेवाला भी कहा गया है। इसके लिए एक शब्द दीजिए।

- माखनचोर

2) श्रीकृष्ण के लिए पाँच पर्यायवाची शब्द लिखिए।

पर्यायवाची शब्द

श्रीकृष्ण :- वासुदेव, सारथी, मुरलीधर, हरि, नन्दलला।

प्रश्न-अभ्यास –

1) बालक कृष्ण किस लोभ के कारण दूध पीने के लिए तैयार हुए?

उत्तर- यशोदा माँ बालक कृष्ण को लोभ देती थी कि यदि वह नियम से प्रतिदिन दूध पीएँगे तो उनकी चोटी भाई बलराम की तरह लंबी और मोटी हो जाएगी। कृष्ण अपने बाल बढ़ाना चाहते थे इसलिए वह ना चाहते हुए भी दूध पीने के लिए तैयार हो गए।

2) कृष्ण अपनी चोटी के विषय में क्या-क्या सोच रहे थे?

उत्तर- कृष्ण अपनी चोटी के बारे में सोचते थे कि उनकी चोटी भी दूध पीने से बलराम भैया के जैसी लंबी-मोटी हो जाएगी। माता यशोदा हर रोज उन्हें पीने को दूध देती थी, फिर भी उनकी चोटी बढ़ नहीं रही थी।

3)दूध की तुलना में कृष्ण कौन-सा पदार्थ अधिक पसंद करते थे?

उत्तर- कृष्ण अपनी माँ के कहने पर दूध पीते थे परंतु उन्हें दूध पीना ज़रा भी पसंद नहीं था। दूध पीने की जगह मक्खन और रोटी खाना पसंद करते थे। माँ के बार-बार दूध पिलाने के कारण वह मक्खन और रोटी नहीं खा पाते थे।

4)"तैं ही पूत अनोखौ जायौ" पंक्ति में ग्वालन के मन के कौन से भाव मुखरित हो रहे हैं?

उत्तर- ये शब्द ग्वालन ने यशोदा से कहे। वह शिकायत करती हुई कहती है कि नटखट कृष्ण प्रतिदिन उनके घर से मक्खन चोरी करके खा जाते हैं। वह यशोदा से कहती हैं कि उन्होंने अनोखे पुत्र को जन्म दिया है जो दूसरों से अलग हैं।

5)मक्खन चुराते समय कृष्ण थोड़ा सा मक्खन बिखरा क्यों देते हैं?

उत्तर- श्री कृष्ण बहुत छोटे थे और छींका बहुत ऊँचा था। जब वह छींका से मक्खन चोरी करते थे तो थोड़ा मक्खन इधर-उधर बिखर जाता था क्योंकि उनका हाथ छींके तक नही पहुँच पाता था। कृष्ण ऐसा जान-बूझकर भी करते थे ताकि उनकी चोरी पकड़ी जाए और माँ उनसे नाराज़ हो जाए तथा माँ को मनाने का अवसर मिले।

6)दोनों पदों में से आपको कौन सा पद अधिक पसंद आया और क्यों?

उत्तर- दोनों पदों में से मुझे पहला पद ज़्यादा पसंद आया ज्यों की सूरदास जी ने भक्तिरस में डूबकर बाल सुलभ व्यवहार का मनमोहक चित्र प्रस्तुत किया है। वात्सल्य रास की सुन्दर अभिव्यक्ति की है। बालक श्री कृष्ण का अपनी माँ से शिकायत करना बड़े सुन्दर ढंग से बताया गया है।

व्याकरण

* अलंकार

अलंकार दो शब्दों से मिलकर बना होता है- अलम- कार। यहाँ पर अलम का अर्थ होता है "आभूषण।"मानव समाज बहुत ही सौन्दर्योपासक है उसकी प्रवर्ती के कारण ही अलंकारों को जन्म दिया गया है। जिस तरह से एक नारी अपनी सुन्दरता को बढ़ाने के लिए आभूषणों को प्रयोग में लाती हैं उसी प्रकार भाषा को सुन्दर बनाने के लिए अलंकारों का प्रयोग किया जाता है। अथार्त जो शब्द काव्य की शोभा को बढ़ाते हैं उसे अलंकार कहते हैं।

* अलंकार के भेद

अलंकार के मुख्यतः दो भेद होते हैंः

1) शब्दालंकार 2) अर्थालंकार

1) शब्दालंकार

जो अलंकार शब्दों के माध्यम से काव्यों को अलंकृत करते हैं, वे शब्दालंकार कहलाते हैं। यानि किसी काव्य में कोई विशेष शब्द रखने से सौन्दर्य आए और कोई पर्यायवाची शब्द रखने से लुप्त हो जाये तो यह शब्दालंकार कहलाता है।

"भुजबल भूमि भूप बिन किन्ही"

इस उदाहरण में विशिष्ट व्यंजनों के प्रयोग से काव्य में सौंदर्य उत्पन्न हुआ है। यदि "भूमि" के बजाय उसका पर्यायवाची "पृथ्वी", "भूप" के बजाय उसका पर्यायवाची "राजा" रख दे तो काव्य का सारा चमत्कार खत्म हो जाएगा। इस काव्य पंक्ति में उदाहरण के कारण सौंदर्य है। अतः इसमें शब्दालंकार है।

2) अर्थालंकार

जब किसी वाक्य का सौन्दर्य उसके अर्थ पर आधारित होता है तब यह अर्थालंकार के अंतर्गत आता है ।

उदाहरण के लिए–

"चट्टान जैसे भारी स्वर"

इस उदाहरण में चट्टान जैसे के अर्थ के कारण चमत्कार उत्पन्न हुआ है। यदि इसके स्थान पर "शीला" जैसे शब्द रख दिए जाएं तो भी अर्थ में अधिक अंतर नहीं आएगा। इसलिए इस काव्य पंक्ति में अर्थालंकार का प्रयोग हुआ है।

* लेखन –बोध

विद्यालय में योग-शिक्षा का महत्त्व बताते हुए किसी समाचार-पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए।

सेवा में,
सम्पादक महोदय,
दैनिक जागरण,
सेक्टर 30,
दिनांक-26 **अप्रैल**, 2019
चण्डीगढ़, **ज़िरखपूर।**
विषय– योग–शिक्षा का महत्त्व।
महोदय,

जन–जन की आवाज, जन–जन तक पहुँचाने के लिए प्रसिद्ध आपके पत्र के माध्यम से मैं

विद्यालय में योग-शिक्षा के महत्त्व को बताना चाहती हूँ और प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाना चाहती हूँ।

योग-शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होंगें। योग शिक्षा उनके स्वास्थय के लिए बहुत अधिक लाभदायक है। योग के माध्यम से वे अपने शरीर की नकारात्मक ऊर्जा को बाहर निकाल सकते हैं और सकारात्मक ऊर्जा को ग्रहण कर सकते हैं। योग के जरिए वे अपने तन-मन दोनों को स्वस्थ रख सकते हैं और उनके सर्वांगीण विकास में भी सहायता मिलती रहेगी।

आपसे विनम्र निवेदन है कि आप अपने समाचार-पत्र के माध्यम से पाठकों को योग के प्रति जागरूक करे और लोगों को योग-शिक्षा ग्रहण करने के लिए आग्रह करें।

धन्यवाद।

भवदीया

(नाम, पता, दूरभाष)

* गतिविधि- श्रीकृष्ण का चित्र बनाओ।